

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 5

सड़क की बात

रवींद्रनाथ ठाकुर (1861-1941)

भाग – 3

अभ्यास-माला

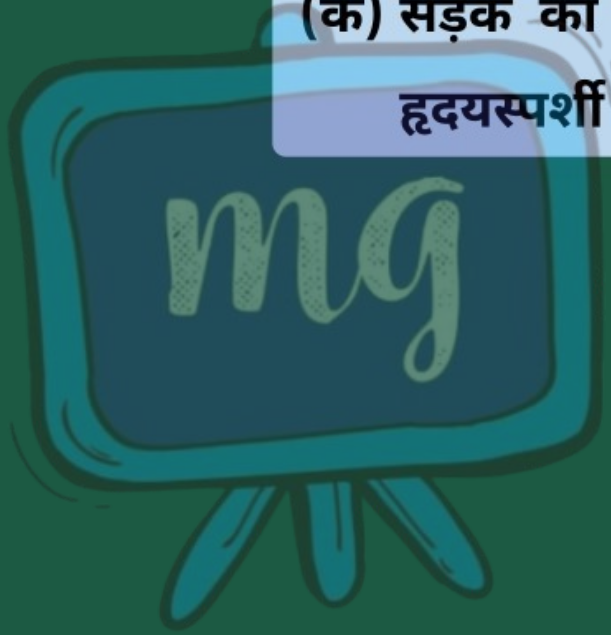
पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) —

(क) सड़क का कौन-सा मनोभाव तुम्हें सर्वाधिक हृदयस्पर्शी लगा और क्यों?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) —

(क) सड़क का कौन-सा मनोभाव तुम्हें सर्वाधिक हृदयस्पर्शी लगा और क्यों?

उत्तर : सड़क का वह मनोभाव मुझे सर्वाधिक हृदय स्पर्शी लगा कि बच्चों के कोमल पाँवों के लिए वह अपने को बहुत कठोर समझती है और खुद कोमल कली बन जाने की कामना करती है ताकि उन्हें कठिनाई न हो । यद्यपि सड़क अपनी विवशता और जड़ता के कारण बन नहीं पाती। बच्चों के इतने स्नेह और प्यार को पाकर भी वह जवाब नहीं दे पाती।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने इसके जरिए सड़क जैसी जड़ तथा निर्जीव वस्तु को इतना सजीव और चेतन रूप दिया, जो मनुष्य की तरह सुख-दुःख को अनुभव कर सकती है। इसलिए यह मुझे बहुत हृदयस्पर्शी लगा है।

(ख) सड़क ने अपने बारे में जो कुछ कहा है, उसे संक्षेप में प्रस्तुत करो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) सड़क ने अपने बारे में जो कुछ कहा है, उसे संक्षेप में प्रस्तुत करो।

उत्तर : सड़क महसूस करती है कि वह शाप से ग्रस्त होने के कारण स्थिर और अविचल है। वह अन्य चेतन प्राणियों की तरह चलना चाहती हैं, बोलना चाहती है। सड़क उसके ऊपर चलने वाले लोगों की सुख-दुःख को जानती है, पर वे उसे कभी भी लक्ष्य नहीं मानता, उसे कृतज्ञता नहीं दिखाता। वह केवल लक्ष्य तक पहुँचाने वाली उपाय मात्र है। कोई भी प्रसन्नतापूर्वक पाँव नहीं रखना चाहता।

सड़क को दुःख है कि वह नन्हें बालकों का स्नेह और प्यार पाकर भी उसका उत्तर देने में असमर्थ है। वह कहती है कि जो लोग लक्ष्य तक जाने के लिए ठका हुआ है और मदद के लिए किसी की ओर मुंह देखते रहते हैं, उन्हें घर पहुँचाने में मदद करती है। लोगों के जन्म और मृत्यु आदि क्रियाकलाप से वह हमेशा अपने को परे रखती है। उसके लिए शोक या संताप करने की छुट्टी ही नहीं है। वह केवल अकेली पड़ी रहती है बिना किसी व्यक्ति की हँसी और रोने की याद से।

(ग) सड़क की बातों के जरिए मानव जीवन की जो बातें उजागर हुई हैं, उन पर संक्षिप्त प्रकाश डालो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) सड़क की बातों के जरिए मानव जीवन की जो बातें उजागर हुई हैं, उन पर संक्षिप्त प्रकाश डालो।

उत्तर : सड़क की बातों के जरिए उजागर हुई मानव जीवन की कई महत्वपूर्ण बातों का विवरण नीचे दिए गए है।

मानव चेतन और सजीव प्राणी है। हर एक का लक्ष्य अलग अलग है। अपने कर्म के अनुसार उन्हें फल मिलता है। जिस व्यक्ति के पास सुख की घर है, स्नेह की छाया है वे आशा के बीज बोता है और जिसके पास नहीं वे निराशा और निरर्थक जीवन गुजारते हैं ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मनुष्य जीवन की ये आशा-निराशा, सुख-दुख और सार्थकता-निरर्थकता का हिसाब भी असम्पूर्ण रहा है। कभी भी इसकी स्थिरता और समाप्ति नहीं रही, क्योंकि मानव जीवन के पुराने आदर्श को, हँसी-खुशी को नये लोगों के कर्म-आदर्श की चरण स्पर्श मिटा देती है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। कोई भी व्यक्ति दूसरों की सहायता के बिना अपनी लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते। सामजिक विच्छेद के कारण लोग एक – दूसरे को प्यार के बदले घृणा करती है, कृतज्ञता दिखाने के बदले कृतघ्न होते हैं और मदद देने के बदले बाधक बन जाते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



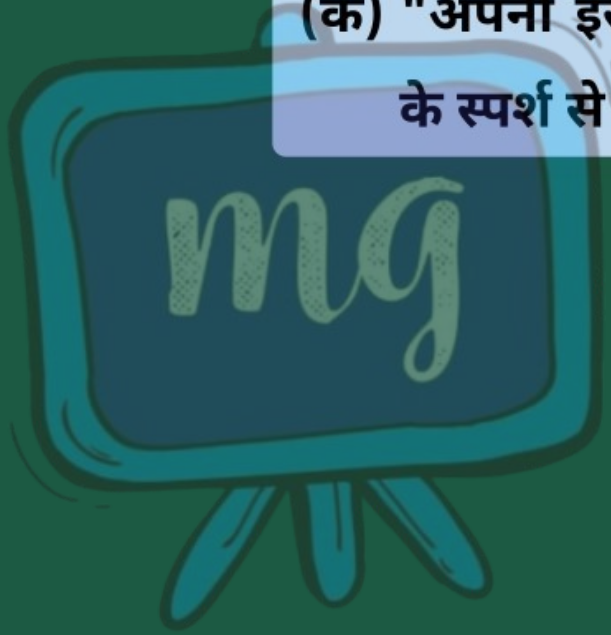
व्यक्ति के ऐसे आचरणों के कारण एक सरव समाज नीरव हो जाते हैं, गरीब अमीर बन जाते हैं और अमीर भी गरीब बन जाते हैं । अंत में अमीर हो, या गरीब हो, हर कोई धूल के स्रोत की तरह उड़ता जाता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) "अपनी इस गहरी जड़ निद्रा में लाखों चरणों के स्पर्श से उनके हृदयों को पढ़ लेती हूँ।"



6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) "अपनी इस गहरी जड़ निद्रा में लाखों चरणों के स्पर्श से उनके हृदयों को पढ़ लेती हूँ।"

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक "आलोक भाग-2 के अन्तर्गत 'विश्वकवि, गीतकार, निबंधकार से लेकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी रवींन्द्रनाथ ठाकुर जी द्वारा रचित आत्मकथात्मक निबंध "सड़क की बात" शीर्षक पाठ से लिया गया है।

व्याख्या : इसमें निबंधकार कविगुरु रवींन्द्रनाथ ठाकुर जी सड़क जैसी निर्जीव वस्तु को सजीव के समान सुख-दुख को अनुभव करने वाले के रूप में दिखाना चाहता है।

कविगुरु के अनुसार सड़क भी अंधे की तरह सबकुछ महसूस कर सकती है। वह अभिशप्त होकर गहरी जड़ निद्रा में पड़ी-पड़ी उसके ऊपर चलनेवाले लोगों के पैरों की ध्वनि या आहट दिन-रात सुनती आई है और उसके हृदयों को जान लेती है कि कौन घर जा रहा है, कौन परदेश जा रहा है, कौन उत्सव में जा रहा है, और कौन श्मशान को जा रहा है।

इस प्रकार गुरुजी ने हर एक मनुष्य के लक्ष्य तक पहुँच जाने में मदद देने वाली सड़क को चेतन प्राणी के समान मान लिया है।

इसमें कविगुरु ठाकुर जी की सुक्ष्म तथा पैनी दृष्टि का झलक मिल गया है।



6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(ख) "मुझे दिन-रात यही संताप सताता रहता है कि मुझ पर कोई तबीयत से कदम नहीं रखना चाहता।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(ख) "मुझे दिन-रात यही संताप सताता रहता है कि मुझ पर कोई तबीयत से कदम नहीं रखना चाहता।

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत कथन हमारी पाठ्य पुस्तक आलोक–भाग-2 के अन्तर्गत 'सड़क की बात' शीर्षक रवीन्द्रनाथ ठाकुर विरचित आत्मकथात्मक निबंध से लिया गया है। इस कथन के जरिए निबंधकार ठाकुर जी ने सड़क जिस प्रकार मनुष्य के अकृतज्ञता का शिकार बन गया है, उसे दिखाना चाहता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या : लोग सड़क के ऊपर से चलते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँच जाती है। सड़क के बिना लोग अपनी लक्ष्य की ओर नहीं चल सकते। वास्तव में इसके लिए लोगों को सड़क को बधाई देना चाहिए, जबकि लोग कृतज्ञता का नाम नहीं लेता। मनुष्य के इस आचरण के लिए सड़क को संताप सताता रहता है। जो परम धैर्य के साथ लोगों को उनके घर के द्वार तक पहुँचाती है उस पर लोग तबीयत से कदम नहीं रखना चाहता। यह सोचकर सड़क को बहुत दुःख पहुँचता है जो उसे दिन-रात सताता रहता है। ठाकुर जीने इस कथन के जरिए सड़क जैसी निर्जीव वस्तु को सजीव के समान अनुभवशील बनाकर मानवीकरण किया है।

6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(ग) “मैं अपने ऊपर कुछ भी पड़ा रहने नहीं देती, न हँसी, न रोना, सिर्फ मैं ही अकेली पड़ी हुई हूँ और पड़ी रहूँगी।

6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(ग) "मैं अपने ऊपर कुछ भी पड़ा रहने नहीं देती, न हँसी, न रोना, सिर्फ मैं ही अकेली पड़ी हुई हूँ और पड़ी रहूँगी।

उत्तर :

प्रसंग : यह कथन हमारी पाठ्य पुस्तक आलोक भाग–2 के अन्तर्गत कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर विरचित "सड़क की बात" शीर्षक आत्मकथामुलक निबंध से लिया गया है। इसमें लेखक ठाकुर जी ने सड़क का मानवीकरण करते हुए उस पर पड़ने वाले सुख–दुख या हँसी–रोने की हक पर प्रतिक्रिया व्यक्त किया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या : सड़क महसूस करती है कि उसे निरन्तर जड़ और स्थिर रहने का शाप मिला हुआ है। उस पर चलने वाले चाहे अमीर हो या गरीब सभी लोगों ने अपना हक समान रूप से प्राप्त किया है। उन लोगों के जन्म और मृत्यु आदि क्रियाकलाप भी सड़क द्वारा ही संभव है पर सड़क इन हँसी और आँसू को अपने पास रखना नहीं चाहती। जो मनुष्य को लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करती है, उससे मनुष्य कभी भी मित्रता का सम्बंध स्वीकार नहीं करते । अतः सड़क अपने को मनुष्य के सुख - दुख से परे रखती है और स्वयं ही अकेली पड़ी रहती है तथा पड़ी रहेगी।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का नाम लिखो —

पद	विग्रह	समास
दिन-रात		
जड़निद्रा		
पग-ध्वनि		
चौराहा		
प्रतिदिन		
आजीवन		

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का नाम लिखो —

पद	विग्रह	समास
दिन-रात	दिन और रात	द्वंद समास
जड़निद्रा	जड़ जैसी निद्रा	कर्मधारय समास
पग-ध्वनि	पग की ध्वनि	संबंध तत्पुरुष
4 चौराहा	चार राहों का समूह	द्विगु समास
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	अव्ययीभाव समास
आजीवन	जीवन भर	अव्ययीभाव समास

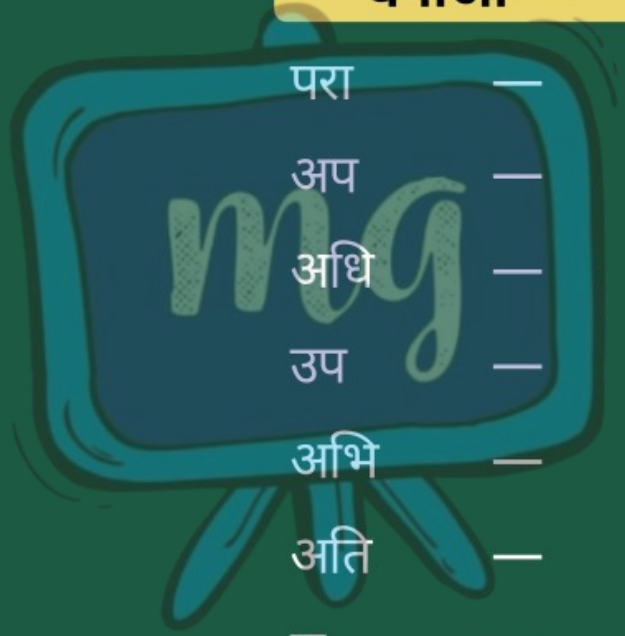
पद	विग्रह	समास
राहखर्च		
पथभ्रष्ट		
नीलकंठ		
महात्मा		
रातोंरात		

पद	विग्रह	समास
राहखर्च	राह के लिए खर्च	संप्रदान तत्पुरुष
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	अपादान तत्पुरुष
नीलकंठ	जिसका कंठ नीला है (शिव)	बहुब्रीहि समास
महात्मा	महान है आत्मा जिसकी	बहुब्रीहि समास
रातोंरात	रात ही रात में	अव्ययीभाव समास

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. निम्नांकित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाओ —



परा —

अप —

अधि —

उप —

अभि —

अति —

सु —

अव —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

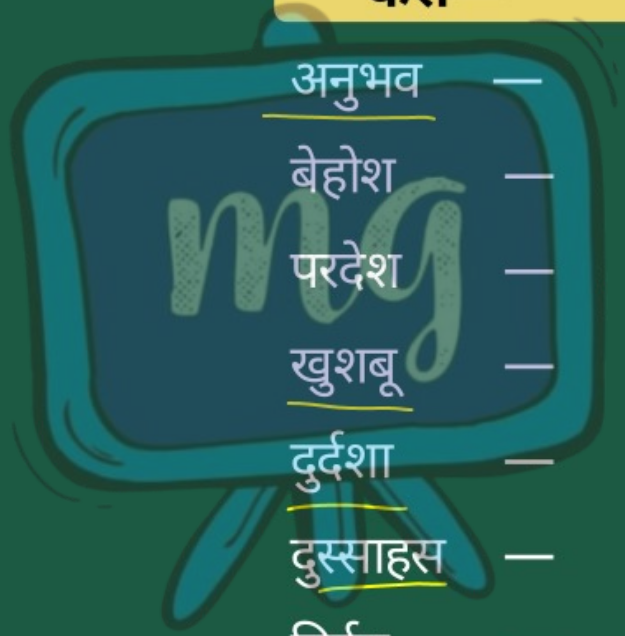
2. निम्नांकित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाओ —

परा	—	पराजय, पराक्रम
अप	—	अपयश, अपमान
अधि	—	अधिपति, अधिनियम
उप	—	उपग्रह, उपयोग
अभि	—	अभिमान, अभिनेता,
अति	—	अतिशय, अतिवृष्टि,
सु	—	सुगंध, सुकर्म
अव	—	अवगुण, अवनति,

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को अलग करो—



अनुभव —

बेहोश —

परदेश —

खुशबू —

दुर्दशा —

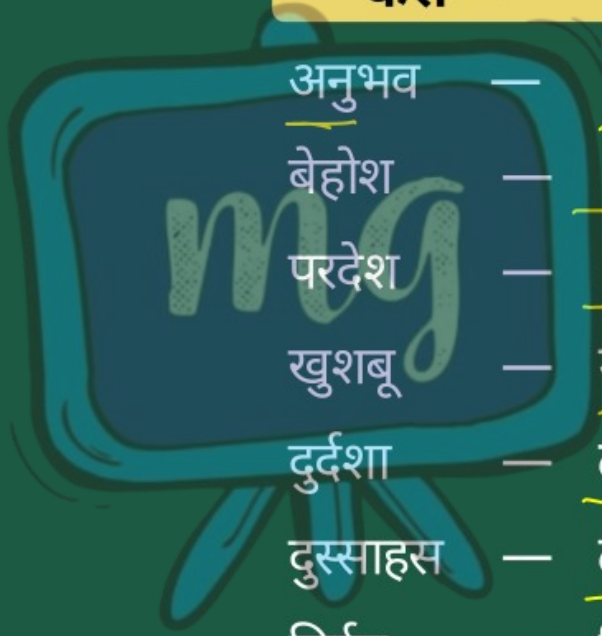
दुस्साहस —

निर्दय —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को अलग करो—

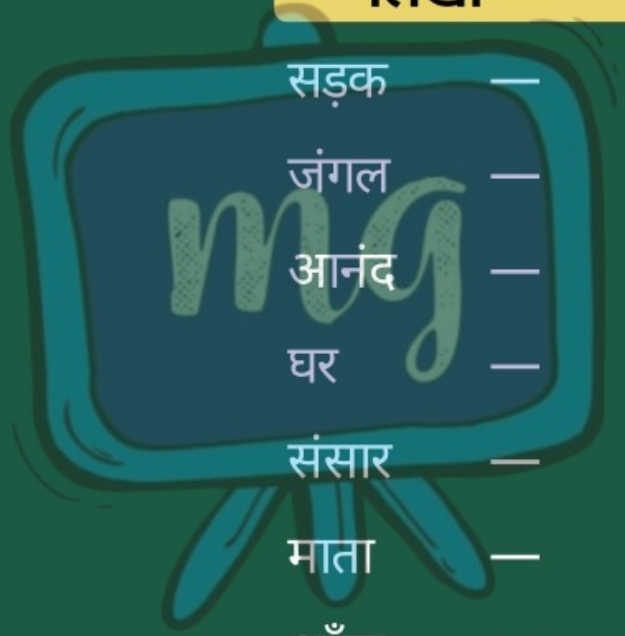


अनुभव	—	अनु
बेहोश	—	बे
परदेश	—	पर
खुशबू	—	खुश
दुर्दशा	—	दुर
दुस्साहस	—	दुस्
निर्दय	—	निर्

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो —



सड़क —

जंगल —

आनंद —

घर —

संसार —

माता —

आँख —

नदी —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो —

सड़क	—	रास्ता, पथ
जंगल	—	विपिन, कानन
आनंद	—	हर्ष, खुशी
घर	—	गृह, आलय
संसार	—	दुनिया, विश्व
माता	—	माँ, जननी
आँख	—	नयन, नेत्र
नदी	—	तटिनी, सरिता

5. विपरीतार्थक शब्द लिखो —



मृत्यु —

अमीर —

शाप —

छाया —

जड़ —

आशा —

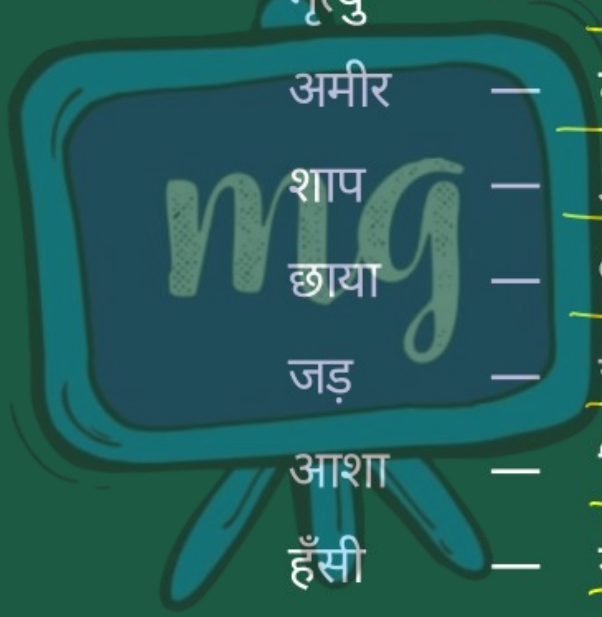
हँसी —

आरंभ —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. विपरीतार्थक शब्द लिखो —



मृत्यु — जन्म

अमीर — गरीब

शाप — आशीर्वाद

छाया — धूप

जड़ — चेतन

आशा — निराशा

हँसी — रोना

आरंभ — अंत

5. विपरीतार्थक शब्द लिखो —



कृतज्ञ —

पास —

निर्मल —

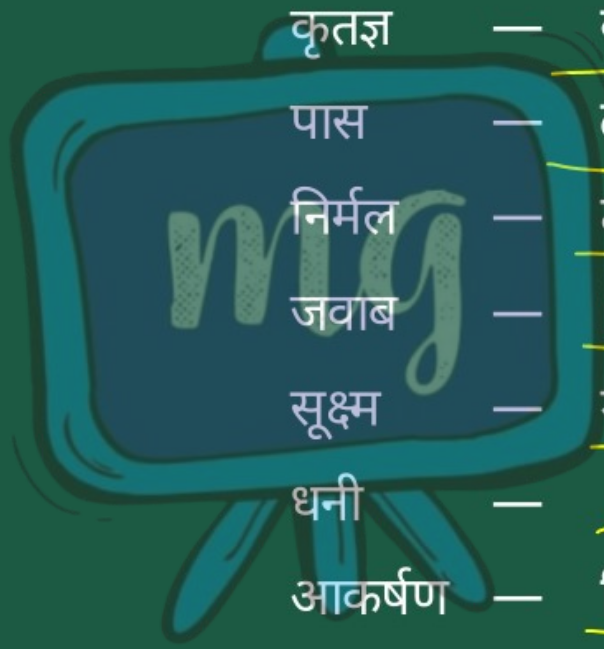
जवाब —

सूक्ष्म —

धनी —

आकर्षण —

5. विपरीतार्थक शब्द लिखो —



कृतज्ञ — कृतघ्न

पास — दूर

निर्मल — मलिन

जवाब — सवाल

सूक्ष्म — स्थूल

धनी — निर्धन

आकर्षण — विकर्षण

6. संधि-विच्छेद करो —

देहावसान —

उज्ज्वल —

रवींद्र —

सूर्योदय —

सदैव —

अत्यधिक —

जगन्नाथ —

उच्चारण —

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. संधि-विच्छेद करो —

देहावसान — देह + अवसान अ+अ=आ

उज्ज्वल — उत् + ज्वल

रवींद्र — रवि + इंद्र

सूर्योदय — सूर्य + उदय अ+उ=ओ

सदैव — सदा + एव

अत्यधिक — अति + अधिक इ+अ=य

जगन्नाथ — जगत् + नाथ

उच्चारण — उत् + चारण

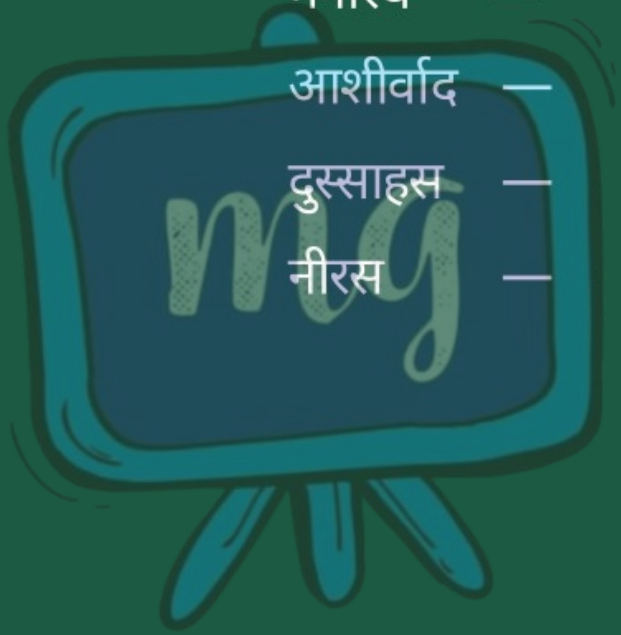
संसार —

मनोरथ —

आशीर्वाद —

दुस्साहस —

नीरस —



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

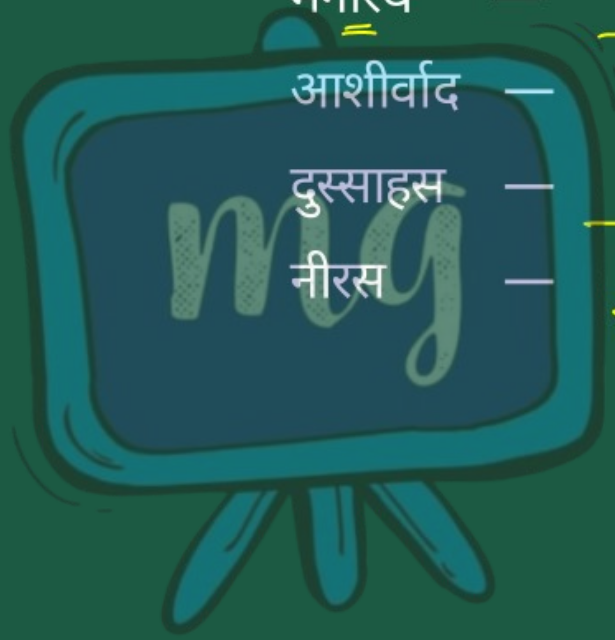
संसार — सम् + सार

मनोरथ — मनः + रथ

आशीर्वाद — आशीः + वाद

दुस्साहस — दुः + साहस

नीरस — निः+ रस



7. योग्यता विस्तार

(1) रवींद्रनाथ ठाकुर जी द्वारा रचित किसी अन्य निबंध अथवा कहानी का संग्रह करके पढ़ो और उसका सार अपने सहपाठियों को बताओ।

(2) 'जहाँ न पहुंचे रवि वहाँ पहुंचे कवि' इस कहावत पर ध्यान रखते हुए कवि-सामर्थ्य पर कक्षा में चर्चा करो।

उत्तर :

इसका अर्थ है कि कवि की कल्पना असीमित होती है और वह उन सब जगहों तक भी पहुँच सकता है, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुंच पाता ।

(3) 'सड़क की बात' की तरह ही 'पत्थर की बात' शीर्षक के अंतर्गत पत्थर की आत्मकथा लिखो।



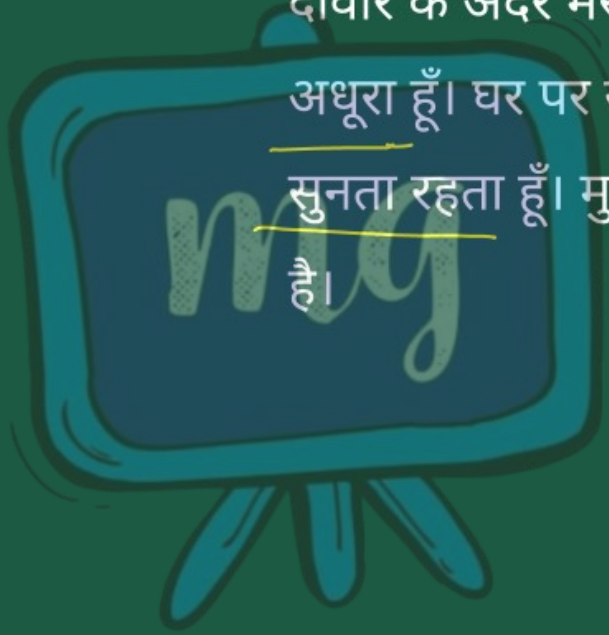
(3) 'सड़क की बात' की तरह ही 'पत्थर की बात' शीर्षक के अंतर्गत पत्थर की आत्मकथा लिखो।

उत्तर :

पत्थर की बात

मैं पत्थर हूँ। वन, जंगल, पहाड़, सभी जगहों में मेरा निवास है। पूरे विश्व की मैं सैर करता हूँ। बड़े- से बड़े महल हो या छोटे-से-छोटे घर, सभी को बनाने में मेरी जरूरत होती है। सबको बनाने में सबसे पहले नींव में मुझे रखा जाता है।

मेरी सबसे अच्छी सहेली सीमेंट है, जो हर दीवार के अंदर मेरा साथ निभाती है। सीमेंट के बिना मैं अधूरा हूँ। घर पर रहने वाले सदस्यों की बातें मैं चुपचाप सुनता रहता हूँ। मुझे चहल--पहल में रहना अच्छा लगता है।



(4) 'नोबेल पुरस्कार' और 'शांतिनिकेतन' के बारे में जानकारी एकत्र करो।



(4) 'नोबेल पुरस्कार' और 'शांतिनिकेतन' के बारे में जानकारी एकत्र करो।

उत्तर : 'नोबेल पुरस्कार' एक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार है। इस पुरस्कार को पूरी दुनिया में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार के रूप में जाना जाता है।

नोबेल पुरस्कार के जनक है अल्फ्रेद नोबेल, जो एक आविष्कारक, उद्यमी, वैज्ञानिक और व्यवसायी थे, जिन्होंने कविता और नाटक भी लिखे ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

'नोबेल पुरस्कार' का संचालन स्टॉकहोम, स्वीडन स्थित नोबेल फाउंडेशन द्वारा किया जाता है। नोबेल पुरस्कार भौतिकी, रसायन विज्ञान, शरीरक्रिया विज्ञान या चिकित्सा विज्ञान, साहित्य, अर्थशास्त्र और शांति के क्षेत्र में दिए जाते हैं।

